अप्रैल २०१३

कीमत रु १२/-

दादा भगवान परिवार का

आक्रम एक्सप्रेस

प्रार्थना पहुँचे परमात्मा को

संपादक :
डिम्पल महेता
वर्ष : १ अंक : १
अखंड क्रमांक : १
अप्रैल २०१३

संपर्क सूत्र
बालविज्ञान विभाग
त्रिमंदर संकुल, सीमंधर सिटी,
अहमदाबाद - कलोल हाइवे,
मु.पो. - अडालज,
जिला . गांधीनगर - ३८२४२१, गुजरात
फोन : (०७९) ३९८३०१००

Website: kids.dadabhagwan

Printed, Published by :

Dimple Mehta on behalf of
Mahavideh Foundation
Simandhar City,
Adalaj-382421.
Dist-Gandhinagar.

Owned by :

Mahavideh Foundation
Simandhar City,
Adalaj-382421.
Dist-Gandhinagar.

Printed at :
Amba Offset

Basement, Parshvanath
Chambers, Nr.RBI,
Usmanpura, Ahmedabad-14.

Published at

Mahavideh Foundation:
Simandhar City,
Adalaj-382421.
Dist-Gandhinagar.

वार्षिक सदस्यता(हिन्दी)
भारत :१२५ रुपये
यु.एस.ए. :१५ डॉलर
यु.के. :१० पाउन्ड
पाँच वर्ष
भारत : ५०० रुपये
यु.एस.ए. : ६० डोलर
यु.के. : ४० पाउन्ड
D.D/ M.O'महाविदेह फाउन्डेशन' के नाम पर भेजें।

प्रार्थना पहुँचे परमात्मा को

संपादकीय

बालमित्रो,

'हे ईश्वर भजीए तने, मोटु छे तुज नाम, गुण तारा नित गाइए, थाय अमारा काम।'

बचपन से ही हम यह और ऐसी अनेक प्रार्थनाएँ करते आए हैं और सुनते आए हैं। प्रार्थना पर हमें अटूट श्रद्धा है कि भगवान प्रार्थना सुनते हैं और अपनी सभी इच्छाएँ पूरी करते हैं। हाँ, बात गलत तो नहीं है।

परम पूज्य दादाश्री की प्रार्थना संबंधी सुंदर समझ इस अंक में दी गई है। प्रार्थना यानी क्या? कैसे करनी है? क्या करनी है? किस हेतु से करनी है? आदि की समझ के अलावा दैनिक जीवन में, साथ ही विद्यार्थी जीवन में सहायक हों ऐसी अद्‌भुत प्रार्थनाएँ भी इसमें दी गई हैं, जिनका उपयोग करनेवाला हर एक व्यक्ति प्रगति के पथ पर प्रयाण करे यही भावना......

- डिम्पल मेहता

अक्रमएक्सप्रेस

अनुक्रमणिका

०३ दादाजी कहते हैं...
०४ प्रार्थना हो तो ऐसी!
०६ यह तो नई ही बात है !
०८ अंदर बैठे हुए भगवान से प्रार्थना
११ अपने आपको परखकरदेखो!
१३ चलो खेलें...
१४ ऐतिहासिक गौरव गाथाएँ
१६ मीठी यादें...
१७ पूज्यश्री के साथ बच्चे.....
१८ प्रार्थना.....
१९ पज़ल के जवाब....

दादाजी कहते हैं...

प्रश्नकर्ता : प्रार्थना यानी क्या?

दादाश्री : प्रार्थना मतलब खुद के लक्ष्य तक पहुँचने के लिए ज़रूरी शक्तियाँ माँगना, वही प्रार्थना है।

प्रश्नकर्ता : सभी को सुख देने की शक्ति मिले, ऐसी प्रार्थना करनी है न?

दादाश्री : हाँ, ऐसी प्रार्थना कर सकते हैं। हररोज़ सुबह दिल से पाँच बार प्रार्थना करनी चाहिए कि, "प्राप्त मन-वचन-काया से इस जगत् के किसी भी जीव को किंचितमात्र भी दुःख न हो, न हो, न हो।"

प्रश्नकर्ता : कोई अपने साथ उल्टा चले तो क्या करना चाहिए?

दादाश्री : कोई उल्टे रास्ते जा रहा हो तो, प्रभु से प्रार्थना करना कि इस पर कृपा करो। हमें सुधारना नहीं है। सामनेवाले को विश्वास में लेने जैसा है। ऐसा बोलते रहने से कोई नहीं सुधरता। सुधारने की बजाय अच्छी भावना करो। प्रभु से प्रार्थना करनी है कि "इस पर कृपा कीजिए। मुझे और जगत् को सद्बुद्धि दीजिए। जगत् का कल्याण कीजिए।"

प्रश्नकर्ता : प्रार्थना करने से उसका फल तो मिलता है न?

दादाश्री : प्रार्थना सच्ची होनी चाहिए। कोई हृदयशुद्धिवाला हो तो उसकी प्रार्थना सच्ची होती है, प्रार्थना करते समय चित्त कहीं ओर हो तो उसकी प्रार्थना सच्ची नहीं कहलाती। अंधाधुंध नहीं चलता, तोता आया राम-गया राम बोले, राम राम बोले, वह समझकर बोलता है या बिना समझे? यह प्रार्थनाएँ तो समझकर, विचारपूर्वक, हृदय को असर हो, ऐसी होनी चाहिए।

कौन-सा उत्तम है?

एक व्यक्ति भगवान से रोज़ प्रार्थना करता है कि, "हे भगवान! मुझे सुखी बनाइए" दूसरा व्यक्ति प्रार्थना करते समय बोलता है कि, "हे भगवान! घर के सभी लोग सुखी हों" उसमें खुद तो आ ही जाता है। तो वास्तव में, सुखी दूसरा व्यक्ति होगा। पहलेवाले की अर्जी बेकार जाएगी और हम तो जगत् कल्याण की भावना करते हैं, उसमें खुद का आत्यंतिक कल्याण आ ही जाता है।

प्रार्थना से प्राप्त शक्तियाँ

प्रश्नकर्ता : आगे बढ़ने के लिए शक्तियाँ कैसे माँगे और किससे माँगे?

दादाश्री : खुद के शुद्धात्मा से या फिर दादा से शक्तियाँ माँग सकते हैं और जिसे आत्मस्वरूप का ज्ञान नहीं है तो वह खुद के गुरु, मूर्ति, प्रभु या जिन्हें भी मानते हों, उनसे शक्तियाँ माँगना। अपने अंदर जो-जो गलत दिखे उसकी लिस्ट बनानी चाहिए और उसके लिए शक्तियाँ माँगनी चाहिए। उनका प्रतिक्रमण करना, दादा से शक्तियाँ माँगो कि "ऐसा नहीं होना चाहिए" तो वे जाएँगी। ये छोटे-छोटे दोष तो प्रार्थना से ही चले जाते हैं। पहले प्रार्थना नहीं की थी, इसी वजह से दोष रह गए, वे प्रार्थना करने से जाएँगे।

प्रश्नकर्ता : दादा, प्रार्थना से जिसका जो प्रारब्ध (नसीब) है, किसीको बीमार पड़ना हो, या किसी का कुछ नुकसान होना है, तो क्या यह बदल सकता है?

दादाश्री : ऐसा है न... प्रारब्ध के प्रकार होते हैं। एक प्रकार ऐसा होता है कि प्रार्थना करने से उड़ जाए, दूसरा प्रकार ऐसा होता है कि तुम थोड़ा-सा पुरुषार्थ करो तो उड़ जाए और तीसरा प्रकार ऐसा है कि तुम चाहे कितना भी पुरुषार्थ करो न, तो भी उसे भुगते बिना छुटकारा ही नहीं होता। वह बहुत चिकने होते हैं पर उसमें भी प्रार्थना से सुख मिलता है। इसलिए प्रार्थना तो करनी ही चाहिए।

प्रार्थना हो तो ऐसी!

सन् १८८४ में, जब नरेन्द्रनाथ (स्वामी विवेकानंद) अपनी बी.ए की परीक्षा की तैयारी कर रहे थे, तब उनके परिवार पर एक भारी आफत आ गई। उनके पिताजी विश्वनाथजी की अचानक मृत्यु हो गई और पूरा परिवार अत्यंत शोक में डूब गया। पिताजी ने पूरी ज़िंदगी अपनी सामर्थ्य (शक्ति) से बाहर खर्च किया था। इसलिए मृत्यु के बाद सभी लेनदार उनके परिवार को बहुत परेशान करने लगे।

बड़े होने के नाते अब पूरे परिवार की ज़िम्मेदारी नरेन्द्रनाथ के सिर पर आ गई। परिवार के सात-आठ सदस्यों का निर्वाह करने के लिए वे नौकरी की खोज़ में भटकने लगे। लेकिन नौकरी मिलने के सभी प्रयत्न निष्फल गए। अपने परिवार को पर्याप्त खाना मिले इसलिए वे कई बार झूठ बोल देते कि उन्होंने किसी मित्र के यहाँ खाना खा लिया हैं और कई बार अपने भूखे भाई-बहन और माता को याद करके वे मित्रों से मिले खाने के निमंत्रण को भी अस्वीकार कर देते। नरेन्द्र के धनवान मित्रों को उनकी कठिन आर्थिक परिस्थिति का पता था फिर भी किसीने उनकी मदद नहीं की और वैसे भी उनका परिवार बहुत स्वाभिमानी था। इसलिए मदद के लिए किसी के सामने हाथ फैलाने का तो उन्हें विचार भी नहीं आया। नौकरी की खोज़ में वे कई बार भूखे-प्यासे ही निकल पड़ते थे। उनके कई मित्रों ने उन्हें अप्रमाणिक ढंग से पैसे कमाने की प्रेरणा दी पर नरेन्द्रनाथ साफ मना कर देते थे।

एक दिन, हर रोज़ की तरह नौकरी की खोज़ में निकलने से पहले नरेन्द्रनाथ भगवान का नाम ले रहे थे। यह सुनकर उनकी माँ बहुत ही कड़वाहट से बोलीं, "चुप हो जा, मूरख। बचपन से ही भगवान को भजता आया है। क्या किया इस भगवान ने तेरे लिए?" अतिशय गरीबी के कारण उनकी श्रद्धालु माता का विश्वास भी डिग गया था। इन शब्दों ने नरेन्द्र को बहुत चोट पहुँचाई।

उन्होंने अपने आप से कहा, "काली माँ तो मेरे गुरु श्री रामकृष्ण परमहंस की सभी प्रार्थनाएँ सुनतीं हैं। मेरे परिवार को इस गरीबी में से निकालने के लिए गुरुजी से प्रार्थना करने के लिए कहूँगा।" जब नरेन्द्र ने गुरुजी को काली माँ से प्रार्थना करने के लिए विनती की तब

श्री रामकृष्ण ने उनसे कहा, "तुम खुद ही काली माँ से प्रार्थना करो। आज मंगलवार है। माँ की आराधना के लिए बहुत शुभ दिन है। आज शाम को उनके मंदिर जाकर, विनय से उन्हें दंडवत् प्रणाम करके जो भी प्रार्थना करोगे, वह ज़रूर फलेगी। काली माँ तो प्रेम और करुणा की मूर्ति हैं। अपने भक्तों की सच्चे दिल से की हुई प्रार्थना वे ज़रूर स्वीकार करेंगी।"

रात के नौ बजे नरेन्द्रनाथ काली माँ के मंदिर में गए। उन्हें माँ के दर्शन करने की आतुरता थी। हृदय में एक अलग ही भाव की तरंग बह रही थी। जब उनकी नज़र माँ की मूर्ति पर पड़ी, तब उन्हें साक्षात माँ के दर्शन हुए। साथ ही साथ ऐसा भी लगा जैसे उन्हें माँ से कोई विशेष आशीर्वाद मिलेगा या तो सुखी सांसारिक जीवन का या फिर आध्यात्मिक आनंद का।

नरेन्द्रनाथ ने सच्ची समझ, ज्ञान, त्याग और माँ के अविरत दर्शन के लिए प्रार्थना की, पर वे माँ से पैसे की माँग करना भूल गए। प्रार्थना करने के बाद उन्हें बहुत अंतर शांति हुई। गुरुजी ने पूछा, तब उन्हें याद आया कि वे प्रार्थना में पैसे की माँग करना तो भूल ही गए।

गुरुजी ने नरेन्द्र से फिर मंदिर जाकर, माँ से अपनी जरूरतें पूरी करने के लिए प्रार्थना करने के लिए कहा। नरेन्द्र फिर से प्रार्थना में पैसे की माँग करना भूल गए। तीसरी बार भी ऐसा ही हुआ।

गुरुजी के आनंद का पार नहीं रहा। उन्होंने नरेन्द्र से कहा, "मनुष्य जीवन का ध्येय संसारिक सुख या फिर खाना या कपड़े मिलना ही नहीं होना चाहिए। तुम्हारा ध्येय लोक कल्याण का होना चाहिए। श्रद्धा रखो। तुम्हारे परिवार का सादगी से गुज़ारा अवश्य होगा।"

थोड़े ही समय में नरेन्द्रनाथ को विद्यासागर स्कूल में एक अध्यापक की नौकरी मिल गई और सादगी से वे अपने परिवार का भरण-पोषण कर सके।

देखा मित्रों, नरेन्द्र की प्रार्थना का उद्देश्य कितना ऊँचा था। किसी भी सांसारिक सुख लेने की उनकी इच्छा नहीं थी। सच्चे दिल की प्रार्थना ने उनके लिए संयोग मिलवा दिए। परिवार के निर्वाह के लिए थोड़े समय नौकरी की और फिर लोक कल्याण का भी बहुत बड़ा काम कर पाए।

सच्चे दिल की प्रार्थना सभी संयोग इकट्ठे कर देती है।

यह तो नई

फिसलना आसान है इसलिए ऊपर चढ़ने के लिए प्रार्थना करके शक्तियाँ माँग लेनी हैं।

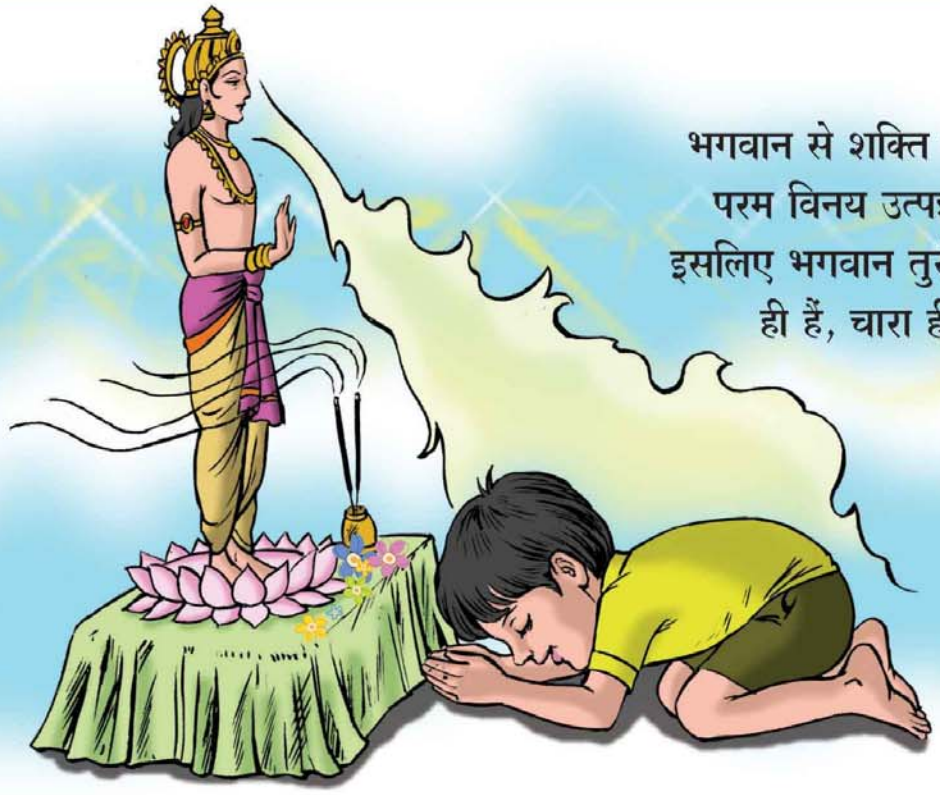

भगवान से शक्ति माँगते हैं तो परम विनय उत्पन्न होता है, इसलिए भगवान तुरंत शक्ति देते ही हैं, चारा ही नहीं।

ही बात है!

शब्दों से ज्यादा प्रार्थना अधिक काम करती है। शब्दों से दो आना(पैसे) काम होगा जब कि प्रार्थना से सोलह आना काम होगा।

अंदर बैठे हुए भगवान से प्रार्थना

दीप लेटे-लेटे कुछ सोच रहा था। उसने इतनी ज़ोर से मुट्ठी में बोल पकड़ी कि वह हाथ से निकलकर नीचे ज़मीन पर गिर गई।

मम्मी, डैडी।

दीप, ये तीसरी बार तूने आवाज़ लगाई। क्या है अब?

मेरी बोल नीचे गिर गई है। डैडी, आप थोड़ी देर मेरे साथ बैठोगे? मुझे अकेले डर लग रहा है।

कैसा डर?

मेरी क्लास के दो गुंडों का, पुनीत और साकेत का! वे लोग रोज़ मेरा मज़ाक उड़ाते हैं। आज मैंने टीचर से उनकी शिकायत की। उनको सज़ा भी हुई, लेकिन जाते-जाते उन्होंने मुझे धमकी दी कि वे लोग मुझे देख लेंगे।

दीप, कई बार लोगों को दूसरों को दुःख देने के परिणाम का अंदाज़ ही नहीं होता, लेकिन उन्हें सुधारने का एक ही रास्ता है। उनके लिए प्रार्थना करना।

प्रार्थना, और इन गुंडों के लिए?

हाँ, तुझे पुनीत और साकेत के भीतर बैठे हुए भगवान से प्रार्थना करनी है कि उनको सद्बुद्धि मिले। बस, इतना ही करेगा तो धीरे-धीरे वे लोग सुधर जाएँगे और तुझे परेशान भी नहीं करेंगे।
सच?
दूसरे दिन रिसेस में...
अरे वाह! चश्मिश आज अपने लिए मज़ेदार लिज्जतदार सैन्डविच लाया है! चल इसका मज़ेदार सैन्डविच खाकर इसे अच्छा मज़ा चखाते हैं।
दीप की आँखों से टप टप आँसू गिरने लगे। उसे उन लोगों पर बहुत गुस्सा आया। इतने में उसका दोस्त पावन वहाँ आया......
रो मत, चल हम टीचर से कहते हैं।
दीप को अचानक उसके डैडी के शब्द याद आए....
यदि तुम उनके प्रति द्वेष रखोगे, तो तुम्हें जलन होगी और वे लोग भी तुम्हारे साथ बैर बाँधेंगे। उसके बदले यदि तुम उनके लिए प्रार्थना करोगे, तो तुम्हें शांति मिलेगी और वे लोग भी सुधरेंगे।
नहीं, मुझे शिकायत नहीं करनी।
डरपोक...हा...हा...हा...

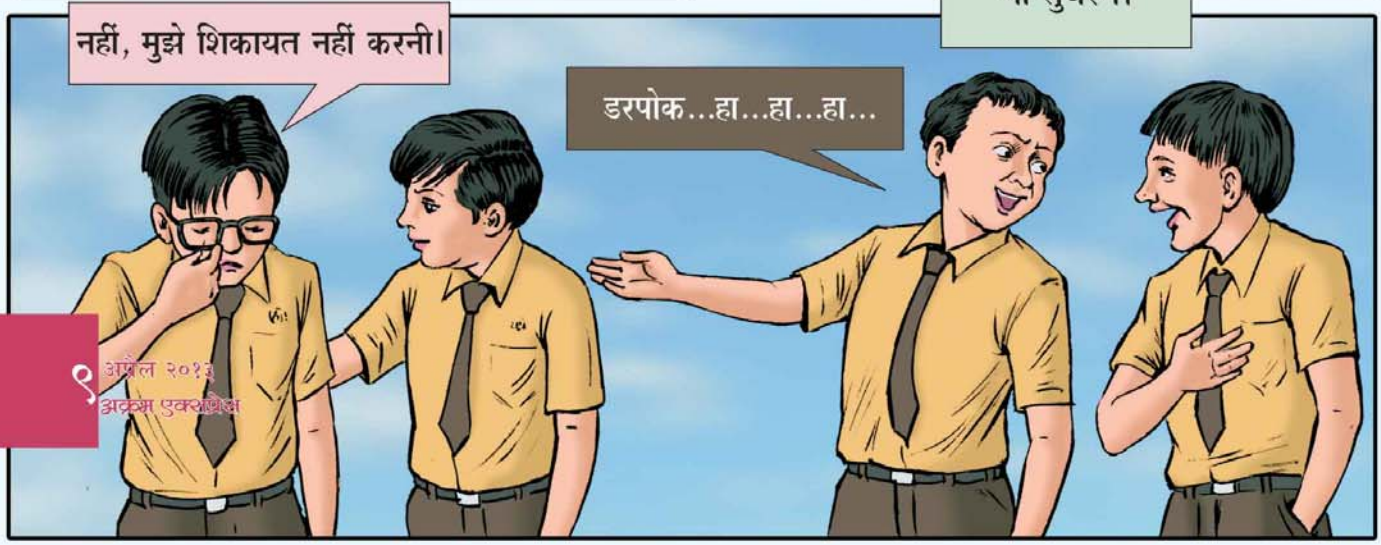

पूरी रिसेस, दीप ने, पुनीत और साकेत के भीतर बैठे हुए भगवान से प्रार्थना की।

हे प्रभु, पुनीत और साकेत को सद्‌बुद्धि दीजिए, उन पर कृपा कीजिए। वे किसी को भी दुःख न दें ऐसी शक्ति दीजिए।

रिसेस के बाद,

आज तो तुझे छोड़ देते हैं, पर खबरदार अब कभी हमारी शिकायत की तो!

प्रार्थना करने के बाद दीप को अंतर में बहुत शांति लगी। फिर तो जब कभी उसे पुनीत और साकेत का डर लगता, तब वह अंदर से उनके लिए प्रार्थना शुरू कर देता। एक रात,

पापा, प्रार्थना का उपाय तो सच में ज़ोरदार है! अब तो पुनीत और साकेत मुझे बिल्कुल परेशान नहीं करते।

हाँ, प्रार्थना से तुझे भी खूब शक्ति मिलेगी। तू भी रोज़ भगवान से ऐसी शक्ति माँगना कि मेरे मन-वचन-काया से किसी को दुःख न हो।

एक दिन रिसेस में.....

क्या हुआ चश्मिश? आज लंच बॉक्स नहीं लाया?

नहीं, जल्दी में भूल गया।

चल, आज तू हमारे साथ लंच कर! मज़ा आएगा।

दीप, पुनीत के सामने मुस्कुराया। आज उसे प्रार्थना के पावर पर स्ट्रोंग श्रद्धा बैठ गई।

अपने आपको परखकर देखो...

टाइल्स में दिए गए शब्दों को जोड़कर प्रार्थना बनाएँ और फिर नीचे बताई गई पाँच परिस्थितियों के सामने योग्य प्रार्थना के नंबर लिखें।

१) | हे प्रभु | काया से | दुःख न | किंचित मा | प्राप्त म | न-वचन | जीव को | हो | सी भी | त् के कि | त्र भी | इस जग |

२) | दो | ज | गत् का | करो | द् बुद्धि | र जग | त्को स | मुझे औ | कल्याण |

३) | न बो | लने की | ठोर | ली भाषा | और तंती | शक्ति | मुझे क | दो |

४) | शांति | लोगों को सु | सभी | ख और | मिले | घर के |

५) | दत छू | उसकी | टे ऐसी | बुरी आ | कृपा करो |

१) तुम्हारे मित्र को तुमसे झूठ बोलने की आदत है।

२) हर रोज़ सुबह दिल से पाँच बार प्रार्थना करना कि,

३) मम्मी-पापा को बड़े भाई की पढ़ाई की बहुत चिंता रहती हैं और उसके कारण रोज़ भाई के साथ घर में झगड़े भी होते हैं।

४) तुम्हारे स्कूल में कुछ विद्यार्थी, शिक्षकों और दूसरे विद्यार्थियों की मज़ाक करके उन्हें बहुत परेशान करते हैं।

५) तुम्हारी कठोर वाणी के कारण तुम्हारा सबके साथ झगड़ा होता रहता है, और उसका तुम्हें पछतावा हैं।

जवाबः-

१) प्राप्त मन-वचन-काया से इस जगत् के किसी भी जीव को किंचितमात्र दुःख न हो।

२) मुझे और जगत् को सद्बुद्धि दो, जगत् का कल्याण करो

३) मुझे कठोर और तंतीली भाषा न बोलने की शक्ति दो।

४) घर के सभी लोगों को सुख और शांति मिले।

५) उसकी बुरी आदत छूटे ऐसी कृपा करो।

(१)-५, (२)-१, (३)-४, (४)-२, (५)-३

चलो खेलें....

१. १ से ६ नंबर, जो त्रिकोण की पास में दिए गए सर्कल में (एक सर्कल में एक नंबर) इस तरह से सेट करो ताकि उसका जादुई टोटल ९ आए।

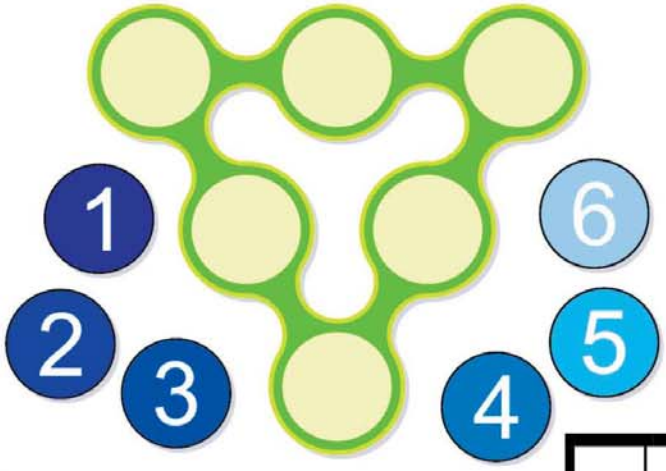

२. नीचे दिए गए ताले की सही चाबी ढूंढो।

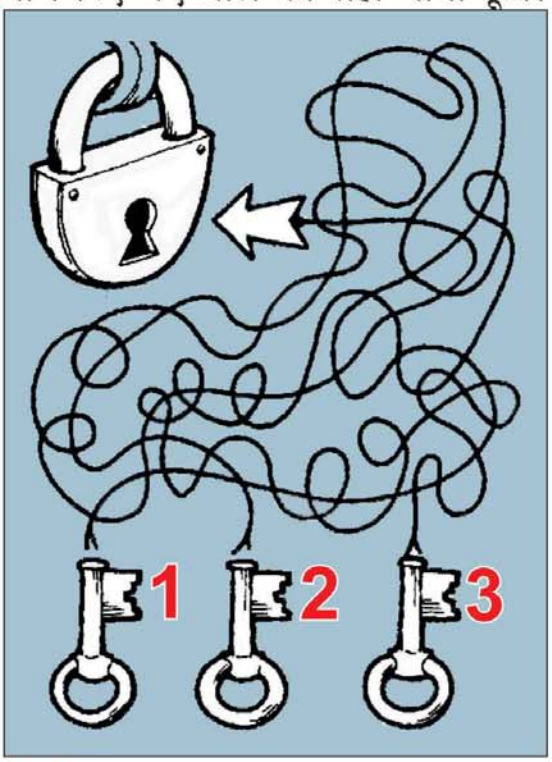

३. क्या तुम ३ चौरस इस तरह से बना सकते हो कि जिससे आकृति में दिए गए सभी ९ बिंदु, उस ३ चौरस में आ जाए?

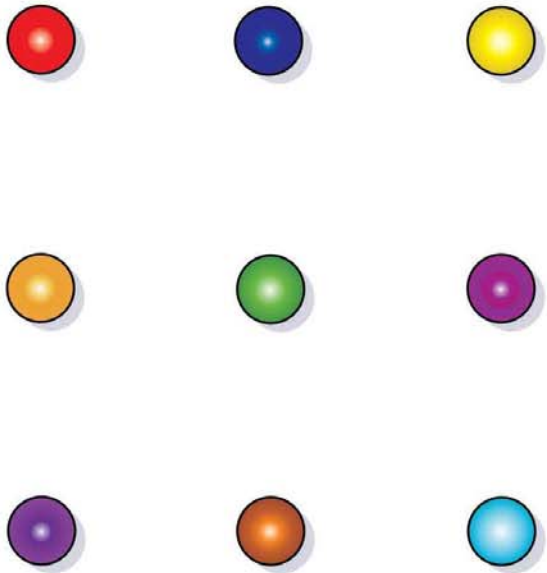

४. Sudoku हल करो।

4	1	5		2	7			
8		6	9			3		5
					9	8	4	
			7		6	1		
			1		4		9	7
	5				2	4		9
2		4	6			7		
	9			7				8

५.

दिए गए तीन चित्र में से जो चित्र एक दूसरे से जुड़े हुए हैं, उस पर टीक करो।

i

a ☐

b ☐

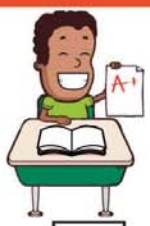

c ☐

ii

a ☐

b ☐

c ☐

iii

a ☐

b ☐

c ☐

iv

a ☐

b ☐

c ☐

६.

दी गई आकृति में एक और स्टार बनाओ कि जो अन्य सभी स्टार जैसा ही दिखे और वह सबसे बड़ा हो और जिसे बनाने से, वह अन्य किसी स्टार को नहीं छूना चाहिए।

ऐतिहासिक गौरव गाथाएँ

अहमदाबाद से ६० मील दूर धंधूका में ई.स.१०८८ में आचार्य हेमचंद्र का जन्म हुआ था। उनकी माता पाहिनी जब गर्भवती थीं, तब उन्होंने एक सुंदर सपना देखा। उस सपने का वर्णन उन्होंने उस समय धंधूका में स्थित आचार्य देवसूरी से कहा। सपने के आधार पर आचार्य ने पाहिनी माता से कहा, "तुम ऐसे पुत्र को जन्म दोगी, जो आध्यात्मिक दुनिया में नाम करेगा।"

पाहिनी ने पुत्र को जन्म दिया और उसका नाम चांगदेव रखा। फिर जब आचार्य देवसूरी धंधूका आए, तब पाहिनी को उनके पुत्र के साथ देखकर उन्होंने पाहिनी से कहा, "तुम्हारे इस बुद्धिमान पुत्र को मुझे सौंप दो, वह एक महान धर्म तारक बनेगा।" आचार्य की विनती से पाहिनी को तो आघात लगा। उसने अपने बेटे को देने से साफ मना कर दिया। आचार्य ने पाहिनी को बहुत समझाया। "तेरा पुत्र जैन परंपरा को बहुत उज्जवल बनाएगा। समाज के उत्थान के लिए अपने स्वार्थ और ममता का बलि दे दे बहन।" अंत में पाहिनी मान गई और अपना पुत्र आचार्य को सौंप दिया। आचार्य ने उसे साधु बनाया और सोमचंद्र नाम दिया।

सोमचंद्र प्रखर बुद्धिशाली था। उसने थोड़े ही समय में तत्वज्ञान, तर्कज्ञान, न्याय, व्याकरण और दूसरे अनेक विषयों का ज्ञान प्राप्त कर लिया। साथ ही साथ सहनशीलता, पवित्रता, सादगी, उमदापन जैसे सद्‌गुण भी उनमें अपने आप ही प्रकट हो गए। इक्कीस वर्ष की छोटी उम्र में आचार्य देवसूरी ने सोमचंद्र को आचार्य की पदवी दी और हेमचंद्र आचार्य नाम दिया।

गुजरात के राजा सिद्धराज की सहायता से आचार्य हेमचंद्र ने उमदा और उच्च प्रकार के संस्कार लोगों तक पहुँचाए। सिद्धराज के अवसान के बाद कुमारपाल राजा बने। कुमारपाल और हेमचंद्र के बीच गुरु-शिष्य का संबंध था, कुमारपाल हेमचंद्राचार्य की

सलाह से चलते और थोड़े ही समय में गुजरात अहिंसा शिक्षण और संस्कार संबंधित महत्वपूर्ण केन्द्र बन गया।

हेमचंद्राचार्य ने कभी भी अपने विकास या भविष्य की चिंता नहीं की थी। वह हमेशा प्रजा के कल्याण का ही सोचते, लेकिन कुछ ब्राह्मण हेमचंद्रचार्य का राजा पर प्रभाव देखकर बहुत ईर्ष्या करते थे और जैनधर्म और हेमचंद्राचार्य को नीचा दिखाने का प्रयत्न करते।

इस वजह से एकबार सभी ब्राह्मण इकट्ठे होकर कुमारपाल राजा से मिले और हेमचंद्राचार्य की टीका करते हुए कहा "राजाजी, आपको मालूम नहीं है, पर हेमचंद्राचार्य बहुत ही अभिमानी हैं। हिन्दू देवी-देवताओं को मानते ही नहीं।" राजा कुमारपाल अपने गुरु के विरुद्ध कोई भी बात मानने के लिए तैयार ही नहीं थे। इसलिए अपनी बात का विश्वास दिलाने के लिए ब्राह्मणों ने राजा कुमारपाल से कहा, "हेमचंद्राचार्य को भगवान शंकर के मंदिर में बुलाओ और उनका अभिमान आप खुद ही देख लो।"

ब्राह्मणों को भरोसा था कि हेमचंद्राचार्य शंकरजी के मंदिर में आएँगे ही नहीं और आएँगे तो शंकरजी के आगे सिर नहीं झुकाएँगे। उस दिन राजा कुमारपाल ने हेमचंद्राचार्य से अपने साथ भगवान शंकर के मंदिर में आने के लिए कहा। हेमचंद्राचार्य ने बिल्कुल भी आनाकानी किए बिना राजा की बात स्वीकार ली। ब्राह्मणों को तो भरोसा था कि हेमचंद्राचार्य को अपमानित करने की उनकी योजना सफल होगी, लेकिन सभी के आश्चर्य के बीच हेमचंद्राचार्य ने भगवान शिव को नमस्कार किया और प्रार्थना की कि, "जगत् में व्यापे हुए राग-द्वेष का नाश करनेवाले भगवान को मैं नमस्कार करता हूँ। फिर वे ब्रह्मा हों, विषणु हों, शिव हों या जिन हों।"

आचार्य हेमचंद्र के इस सद्कार्य से यह साबित होता है कि वे किसी भी धर्म के परमात्मा के गुणों को प्रणाम करते हैं। आचार्य हेमचंद्र के प्रभाव से राजा कुमारपाल ने जैनधर्म अंगीकार किया और राज्य में हिंसा या किसी भी पशु को मारने पर प्रतिबंध लगा दिया। जैनधर्म में बताए हुए बहुत से नियमों को लागू किया। उनके प्रभाव से गुजरात शाकाहार की तरफ झुका।

मीठी यादें

नीरू माँ के बर्थ डे की बात है। सीमंधर सिटी में रहनेवाली छोटी-छोटी लड़कियाँ नीरू माँ के लिए कुछ न कुछ खाना बनाकर ले जानेवाली थी। एक लड़की सैन्डविच बनाकर ले गई। उस बच्ची के लिए नीरू माँ अपनी मम्मी से भी ज्यादा विशेष थी। इतनी अधिक विशेष कि एक बार मम्मी न हों तो चले, लेकिन नीरू माँ नहीं हों तो न चले।

उसने नीरू माँ को चीज़ सैन्डविच देते हुए पूछा, "नीरू माँ, चीज़ सैन्डविच खाएँगे?" नीरू माँ ने कहा, "नहीं, मैं चीज़ नहीं खाती।"

उसने दीपकभाई से पूछा तो उन्होंने भी "ना" बोला कि वे भी चीज़ नहीं खाते।

उसके बाद नीरू माँ ने उस बच्ची से पूछा कि, "तुम चीज़ खाती हो?" उसने कहा, "हाँ"

नीरू माँ ने तुरंत प्रश्न किया, "तुझे शादी करनी है?"

बच्ची ने जवाब दिया, "नहीं, नीरू माँ मुझे ब्रह्मचर्य का पालन करना है।"

यह सुनकर नीरू माँ बोलीं, "जा, बाहर जाकर बैठो" वह बच्ची उदास होकर बाहर चली गई। वह डर गई कि अब नीरू माँ उसे फिर नहीं बुलाएँगी तो!

थोड़ी देर बाद नीरू माँ ने उसे अंदर बुलाया और अपने हाथ से उसे वेजीटेबल सैन्डविच खिलाते हुए कहा, "लो, यह चखकर बताओ कि कैसा है?"

खाकर उस बच्ची ने कहा, "बहुत अच्छा है।"

नीरू माँ ने कहा, "तो प्रोमिस कर कि अब से तू चीज़ नहीं खाएगी।"

बच्ची ने भी तुरंत प्रोमिस कर दिया।

नीरू माँ ने कहा, "चीज़, वह ब्रह्मचर्य पालन करनेवालों के लिए खाने जैसी चीज़ नहीं है।"

फिर नीरू माँ ने उससे प्रेम से कहा, "चल, मेरे हाथ धुला दे।" उसने नीरू माँ के हाथ धुलवाए और खुश होकर घर गई।

देखा मित्रो, हमें पता भी नहीं होता, लेकिन नीरू माँ, हमारे ध्येय में क्या बाधक है, उसका कितना ध्यान रखती थीं और कितनी सरलता से उसमें से बाहर भी निकालती थीं!

पूज्यश्री के साथ बच्चे

"जीवन में एक सिद्धांत रखना कि, "मुझे किसी के नेगेटिव देखने ही नहीं हैं, हमेशा पॉज़िटिव ही रहना है।"

प्रश्नकर्ता : दीपकभाई, मुझे किसी का भी नेगेटिव जल्दी दिख जाता है। पॉज़िटिव जल्दी नहीं दिखते।

दीपकभाई : जब आप खाली बैठे हों, तब उस व्यक्ति के पॉज़िटिव लिखना। एक नेगेटिव के सामने दो पॉज़िटिव लिखना। जिससे अंदर पॉज़िटिव शक्ति उत्पन्न होगी और जितने नेगेटिव दिखें उनकी माफी माँग लेना कि, "हे दादा भगवान, ऐसा उल्टा देखा उसकी माफी माँगता हूँ। मुझे पॉज़िटिव दिखें ऐसी शक्ति दीजिए।" यह मन तो तरह-तरह का बताएगा लेकिन हमें समझ जाना है कि यह मन जो बता रहा है, वह गलत है। जैसे हम खाना खाते हों और पास में कोई खा रहा हो, तो हम उसकी थाली में थोड़े ही हाथ डालेंगे? मन में होगा कि उसकी थाली में अच्छा लड्डू हैं और अपनी थाली में नहीं है तो हम हाथ डालेंगे?

प्रश्नकर्ता : नहीं।

दीपकभाई : मन तो बताएगा लेकिन अपने पास समझ है न कि कोई अविवेक नहीं करना है, किसी को दुःख नहीं देना है। मन उल्टा बताए फिर भी हमें सीधा कर देना है। मन उल्टा बताए, "यह बहुत झूठा आदमी है" तो कहना कि "नहीं, दूसरे के लिए अच्छा भी है, हमें उल्टा नहीं देखना है।" मन की बात का हमें विरोध करना है। धीरे-धीरे यह कचरा, नेगेटिविटी चली जाएगी। दादा भगवान क्या कहते हैं कि, जीवन में एक सिद्धांत रखना कि, "मुझे किसी के नेगेटिव देखने ही नहीं है। हमेशा पॉज़िटिव ही रहना है।" कोई नेगेटिव बात करे तो उसे कहना कि मुझे यह पसंद नहीं है। पॉज़िटिव रहेंगे तो नेगेटिव का सब कचरा निकल जाएगा। हमें विरोध करना है कि, "हे दादा भगवान! मुझे पॉज़िटिव रहने की शक्ति दीजिए।"

प्रश्नकर्ता : मैं अपने टीचर की अपेक्षा पूरी नहीं कर पाती, मुझे ऐसा भय है।

दीपकभाई : क्या हुआ?

प्रश्नकर्ता : जब मेरे टीचर मुझसे क्लास में सवाल पूछते हैं और मुझे उसका जवाब नहीं आता तब वे कहते हैं की, "मुझे तेरी तरफ से बहुत अपेक्षा है।"

दीपकभाई : हाँ, तो तुम्हें ज्यादा पढ़ना चाहिए। क्योंकि टीचर ऐसी आशा रखते हैं कि आप ज्यादा पढ़ो। ज्यादा मार्क्स लाने के लिए यह ठीक है। दादा भगवान से शक्ति माँगने का प्रयत्न करो। दस मिनिट "दादा भगवान के असीम जय जयकार हो" बोलना। दादा से एकाग्रता के लिए शक्ति माँगना, तो धीरे-धीरे तुम्हारी पढ़ाई में सुधार होगा। टीचर जो कुछ भी कहते हैं, उसे स्वीकार करना और पॉज़िटिव रहने का प्रयत्न करना। जिससे टीचर की अपेक्षाएँ भी पूरी होंगी और तुम्हारी पढ़ाई भी अच्छी होगी।

प्रश्नकर्ता : तो मुझे उनकी अपेक्षाएँ पूरी करनी चाहिए?

दीपकभाई : हाँ, यह तुम्हारी पढ़ाई के लिए उपयोगी होगा, न कि टीचर के लिए। यदि टीचर को तुम्हारे लिए अपेक्षा है कि, तुम अच्छा सीखो, अच्छा पढ़ो और उनके सब्जेक्ट में अच्छे मार्क्स लाओ। तो इसमें गलत क्या है?

प्रश्नकर्ता : कुछ नहीं।

दीपकभाई : यह तुम्हारे भविष्य के लिए उपयोगी होगा और भविष्य में तुम्हारा कैरियर अच्छा होगा। तो हम नेगेटिव क्यों लें कि क्यों इतनी अपेक्षाएँ रखते होंगे? तुम्हें पॉज़िटिव रहना चाहिए। टीचर मुझसे जो कहती हैं वह मेरे लिए अच्छा है, न कि टीचर के लिए।

प्रार्थना

रोज़ सुबह उठकर की जानेवाली प्रार्थना

हे अंतर्यामी परमात्मा! मेरे मन से, वाणी से और वर्तन से किसी को भी दुःख न हो ऐसी मुझे शक्ति दीजिए।

हे अंतर्यामी परमात्मा, मुझे आपके जैसा ही बनाना और मोक्ष ले जाना।

पढ़ाई करने से पहले की जानेवाली प्रार्थना

जब भी पढ़ने बैठना हो, तब एक जगह पर स्थिर बैठकर सबसे पहले दस मिनिट आँखें बंद करके एक-एक शब्द पढ़ सकें इस तरह

"दादा भगवान के असीम जय जयकार हो"

बोलना। "दादा भगवान" यानी खुद के भीतर बैठे हुए आत्मारूपी भगवान को संबोधन है। "दादा भगवान" की जगह आप जिन भगवान को मानते हों, उनका नाम लेकर भी एक-एक शब्द पढ़ रहे हों, उस तरह ज़रूर बोल सकते हैं।

परीक्षा के समय, पढ़ने से पहले की जानेवाली प्रार्थना.....

हे अंतर्यामी परमात्मा! मैं आपसे हृदयपूर्वक प्रार्थना करता हूँ कि मुझे पढ़ा हुआ सब याद रहे, ऐसी सर्वोत्तम शक्ति दीजिए। उसके लिए हे अंतर्यामी परमात्मा! मेरी चित्तवृत्ति के जो-जो दोष हुए हों उनके लिए क्षमा माँगता हूँ एवं चित्तवृत्ति को आप में और पढ़ने में एकाग्र रखने की शक्ति दीजिए,शक्ति दीजिए,शक्ति दीजिए।

प्रतिक्रमण

हे अंतर्यामी परमात्मा! आज पूरे दिन में जाने या अन्जाने से मेरे मन से, वाणी से या काया से किसी भी जीव को दुःख हुआ हो, तो उसके भीतर बैठे हुए भगवान से माफी माँगता हूँ, उसका हृदयपूर्वक खूब पश्चाताप करता हूँ, उसके लिए मुझे क्षमा कीजिए और फिर से ऐसे दोष कभी भी न करूँ ऐसी मुझे परम शक्ति दीजिए, शक्ति दीजिए, शक्ति दीजिए।

पहेलियों के जवाब

६.

५. i-b,c ii-a,c iii-a,c iv-b,c

२.

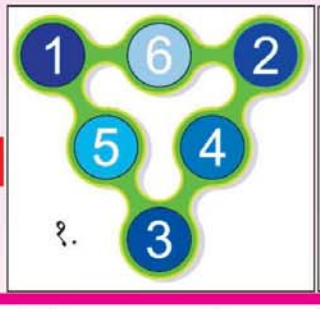

३.

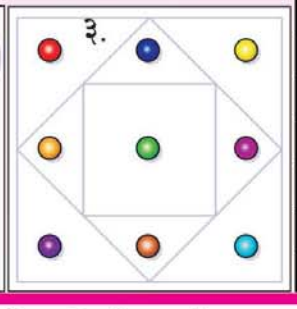

४.

3	7	9	5	6	8	2	1	4
4	1	5	3	2	7	9	8	6
8	2	6	9	4	1	3	7	5
1	6	7	2	5	9	8	4	3
9	4	8	7	3	6	1	5	2
5	3	2	1	8	4	6	9	7
7	5	3	8	1	2	4	6	9
2	8	4	6	9	5	7	3	1
6	9	1	4	7	3	5	2	8

मित्रो, आपका वेकेशन शुरू हो गया है न? तो चलो, अक्रम एक्सप्रेस की "आर्टिस्टिक(कलात्मक) हैन्ड राइटिंग कॉम्पीटिशन" स्पर्धा में जुड़ जाओ।

ग्रुप - ७ से ९ वर्ष, १० से १२ वर्ष, और १३ से १५ वर्ष।

स्पर्धा के नियम

१. आपके पसंदीदा विषय पर कम से कम बीस लाइन लिखनी रहेगी।

२. गुजराती, अंग्रेज़ी या हिन्दी भाषा में लिखकर भेजना रहेगा।

३. कलात्मक रूप लाने के लिए पेन, ब्रश, केलिग्रफी(सुलेखन) अथवा मोनो-लाइन मार्कर का इस्तेमाल कर सकते हैं। अंग्रज़ी भाषा के लिए, कर्सीव अथवा मेनुस्क्रीप्ट, दोनों लिखावट मान्य की जाएगी।

४. लिखावट स्पष्ट पढ़ सके, ऐसी होनी चाहिए।

५. हाथों से लिखी हुई कोपी दिए गए पते पर अथवा स्केन करके, उस कोपी को दिए गए इ-मेल पर भेजना है। प्रिन्ट आउट या फोटो कोपी स्पर्धा के लिए मान्य नहीं की जाएगी।

६. आपकी एन्ट्री हमें १० मई, २०१३ तक मिल जानी चाहिए।

हर एक ग्रुप के विजेता का प्राइज़ उनके घर के पते पर पहुँचा दिया जाएगा। स्पर्धा का परिणाम जून २०१३ की पत्रिका में छपवाया जाएगा।

अक्रम एक्सप्रेस के पाठकों के लिए.....

बालमित्रो,

हर महीने हम मिलते तो हैं ही लेकिन मैं तुम्हें पूछना तो भूल ही जाता हूँ। तो चलो, आज पूछ ही लेता हूँ। मित्रो, आपको अक्रम एक्सप्रेस पढ़ना अच्छा लगता है? अक्रम एक्सप्रेस पढ़ने के बाद तुम्हारे जीवन में कैसा परिवर्तन अनुभव कर रहे हो? वह हमें ज़रूर बताना ताकि हमें सबसे अच्छा अक्रम एक्सप्रेस बनाने में प्रोत्साहन मिले। आपके अनुभव हमें नीचे दिए गए एड्रेस या इमेल आइडी पर ज़रूर से भेजना।

बालविज्ञान विभाग, त्रिमंदिर संकुल, सीमंधर सिटी, अहमदाबाद-कलोल हाईवे,
मु.पो.- अडालज, जि. - गांधीनगर - ३८२४२१,e-mail: akramexpress@dadabhagwan.org

Akram Express
April 2013
Year : 1, Issue : 1
Conti. Issue No.:1

BALVIGNAN
Fun 'n' Gnan with Dada

Date of Publication On 8th Of Every Month
Posted at AHD. P.S.O. Sorting Office Set-1
on 8th of every month

खास बेबी एम,एच.टी. ग्रुप के लिए प्रकाशित की गई नई बुक "अक्रम पिडीया" का उद्घाटन करते हुए पूज्यश्री

दि. ६-३-२०१३, पूज्यश्री के ज्ञानदिन पर बेबी एम.एच.टी. बच्चों के द्वारा किए गए डान्स की एक झलक

पास में दिए गए दोनों चित्र में एक से ज्यादा चित्र है, वह ढूंढ निकालो।

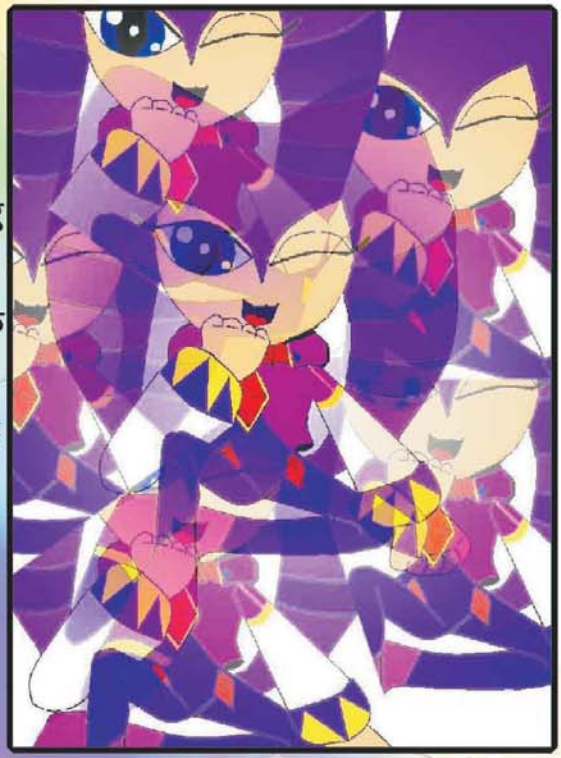

Printer, Publisher and Owner - Mr. Dimple Mehta on behalf of Mahavideh Foundation, Editor - Mr. Dimple Mehta, Printing Press **Amba offset:-** Parshwanath Chembers, Usmanpura, Ahmedabad-14 and published at Mahavideh Foundation, 5, Mamtapark Society, Bh. Navgujarat College,Usmanpura, Ahmedabad-14.